

‘जागती जोत’ के ‘पंडति भरत व्यास वशिषांक’का वमिचन

चर्चा में क्यों?

21 जनवरी, 2022 को राजस्थान के कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने जयपुर स्थिति अपने राजकीय आवास पर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की मुखपत्रिका ‘जागती जोत’के ‘पंडति भरत व्यास वशिषांक’का वमिचन कया ।

प्रमुख बदि

- इस वशिषांक के माध्यम से पंडति व्यास द्वारा रचित साहित्य के संबंध में, वशिषकर युवा पीढ़ी को महती जानकारी और प्रेरणा मलि सकेगी ।
- इस अवसर पर डॉ. बी.डी. कल्ला ने कहा कि भिरुधरा के अमर गीतकार पं. भरत व्यास राजस्थानी भाषा से बहुत प्रेम करते थे । उनके अनेक गीतों में राजस्थान की माटी की महक है और भक्त-शक्त-प्रेम के साक्षात् दर्शन होते हैं ।
- राजस्थान की जनि प्रतभिओं ने प्रदेश का नाम देश-वदिश में रोशन कया है, उन बहुआयामी व्यक्तित्व व कृतित्व के धनी लोगों में पं. भरत व्यास का नाम प्रमुख है । वे एक सफल गीतकार होने के साथ-साथ बेहतरीन अभनिता, नरिदेशक, संगीतकार, कथाकार व आशुकव भी थे ।
- पंडति भरत व्यास ने बीकानेर, चूरु, कोलकाता में रंगकर्मी के रूप में अपनी अनूठी छाप छोड़ी । बाद में वे मुंबई गए व अनेक फलिमें में सैकड़ों कालजयी गीतों की रचना की । पंडति व्यास द्वारा रचित गीत- ‘ऐ मालकि तेरे बंदे हम’ आज भी शकिषण संस्थाओं और वभिनिन धार्मकि स्थलों पर प्रार्थना के रूप में गाया जाता है ।
- उनके द्वारा लिखित अन्य गीत- जरा सामने तो आओ छलिये, आ लोट के आज मेरे मीत, आधा है चंद्रमा, यह कहानी है दीये की और तूफान की, सहति ऐसे अनेक गीत हैं, जो इतने वर्ष बाद भी प्रसंगिक और मंत्रमुग्ध कर देने वाले हैं ।
- अकादमी सचवि शरद केवलिया ने बताया कि जागती जोत के जनवरी माह के इस वशिषांक में देश के लब्धप्रतिष्ठ राजस्थानी साहित्यकारों के पं. भरत व्यास के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आधारित आलेख, गीत, अनुवाद आदि सम्मलित कये गए हैं ।